सत्य साहित्य

वर्ष 54 / अंक 1
जुलाई
2015

मूल्य ₹ 5

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

168

अपने पथ पर आप चलाना,
पथ पतन न पाऊं मैं ।

① पावन पथ है परम प्रभु तेरा,
उस से पैर हटे न मेरा ।
पर पन्थों की पग डंडी पर,
स्वप्नों में भी न जाऊं मैं ॥ अपने...

② तेरे पथ का पथिक मैं प्राणी,
संशय वश न पाऊं हानि ।
पग पग पर डग मग न डोलूं,
प्रेम प्रबल उर लाऊं मैं ॥ अपने...

जय श्री राम जय जय श्री राम

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- मँगल निर्वाण
- व्यास पूर्णिमा पर संदेश
- गुरु तत्व
- प्रश्न उत्तर
- परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के संस्मरण
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- बच्चों के लिए
- कैलेंडर

मँगल निर्वाण
अपने निर्वाण से भी दिया संदेश

संत अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से तो जीवन–भर लोगों का मार्गदर्शन करते ही हैं, अपने निर्वाण से भी उपदेश दे जाते हैं। 2 जुलाई, 2012 के दिन परम पूजनीय श्री महाराज जी का हरिद्वार नीलधारा पर श्री गंगाजी के तट पर 'राम' कहकर ब्रह्मरंध्र (ब्रह्म द्वार) से प्राण त्यागना साधकों के लिए उपदेश था कि दिव्य जीवन की चरम परिणति ऐसी होती है। मृत्यु को मँगलमय बनाना हो तो जीवन को राम–नाम से पूरित करके दिव्य बनाना होगा। 2 जुलाई प्रत्येक साधक के लिए आत्मनिरीक्षण और आत्मावलोकन का अवसर बन गया है।

इसी प्रकार 29 जुलाई भी परम पूजनीय श्री प्रेमजी महाराज का निर्वाण दिवस मानो हमें यह प्रेरणा देता है कि संसार के पीड़ित जनों के दुःख संताप अपने ऊपर लेकर भी संत असीम शांति के साथ इस संसार सागर को तर जाते हैं।

धन्य हैं दोनों विभूतियाँ, जो अपने निर्वाण से भी साधकों को राह दिखा गईं। उनके कृत्यों का हम सब अनुकरण करें, यही गुरूजनों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ऐसे गुरूजनों को कोटि–कोटि वंदन, राम–राम। ■

(एक वरिष्ठ साधक)

श्रीरामशरणम् की परम्परा एवं अनुशासन पर परम पूजनीय श्री महाराज जी के विचार

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज द्वारा स्थापित आध्यात्मिक परम्परा के उच्च मानक और परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज द्वारा रक्षित इन परम्पराओं को जीवित रखने के लिए परम पूजनीय महाराज जी निरन्तर प्रयासरत रहे। इस संदर्भ में उन्होंने निम्न विचार अभिव्यक्त किए : ''श्रीरामशरणम् संस्था को अपनी आध्यात्मिक गतिविधियों और नियमों से सम्बन्धित किसी प्रकार के अनुसंधान एवं विकास (R&D) को करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज ने यह सब बहुत सरल एवं स्पष्ट रुप में रख दिया है। परम पूजनीय प्रेम जी महाराज ने इसका पालन पूरी कड़ाई से किया और मैंने इनका अनुसरण और भी कड़ाई से किया। साधकों के बीच किसी भी प्रकार पूछताछ या तर्क वितर्क नहीं होना चाहिए।''

परम पूजनीय श्री महाराज जी ने ट्रस्ट की एक बैठक में कहा कि नियमों का पालन बिना किसी समझौते के किया जाना चाहिए। उन्होंने बलपूर्वक इस बात को कहा कि साधकों को अवश्य ही नियमों का पालन करना चाहिए। ■

व्यास पूर्णिमा के उपलक्ष्य में नम्र निवेदन

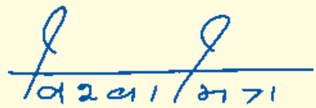

जैसे भगवान् राम का प्रकाश दिवस मनाने के लिए राम नवमी, भगवान् कृष्ण का अवतरण दिवस मनाने के लिए जन्माष्टमी, भगवान् शिव के लिए शिवरात्रि, का पुण्य पर्व मनाया जाता है, इसी प्रकार महर्षि व्यासदेव के आध्यात्मिक उपकारों को स्मरण कर, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का पर्व है आषाढ़ माह की पूर्णिमा व्यास पूर्णिमा। महर्षि के श्री मुखारविन्द से निकले शब्द हैं ''सब का गुरु परमेश्वर है, वही हमारा आद्याचार्य है, सब गुरुओं का वही गुरु है, उसी जगद्गुरु के पूजन का दिन है आज''। स्वामी जी महाराज फरमाते हैं ''व्यास पूजा का पुण्य पर्व हमारे धर्म में, आध्यात्मिक सम्बन्ध स्मरण करने के लिए नियत है और इस सम्बन्ध का मूल है श्री राम नाम''। अतः नित्य अमृतवाणी पाठ द्वारा इस राम नाम की महिमा को जानकर, उसमें अटूट विश्वास धारण करके, उसे जीवन में उतारने का संकल्प लेने का दिवस है आज। संसार में रहते हुए उस जगनियन्ता के प्रति कर्तव्य को स्मरण करने का दिन है आज। वह कर्तव्य है उससे शाश्वत सम्बन्ध को निभाना, मोक्ष की प्राप्ति, भवरोग का अन्त, अपने सत्स्वरुप की अनुभूति तथा परमेश्वर की अनन्य–भक्ति द्वारा उसकी प्रेम व कृपा–पात्रता लाभ करना। अपने तन, मन, धन को ही नहीं, अपितु अपने अहं को भी श्री राम चरणों में समर्पित करके साधनामय, भक्तिमय जीवन व्यतीत करने का दृढ़ निश्चय का दिन है आज। मुख्यतम समस्या का स्मरण कर उसके निदान एवं सांसारिक समस्याओं के विस्मरण का पर्व है आज। अपनी जीवन डोर प्रभु श्री राम को सौंपने का शुभ दिन है आज। उस दयालु प्रियतम का आश्वासन है :

''तू मेरा बनके तो देख,
हर बन्दे को तेरा न बना दूँ तो कहना।
मुझे अपना मददगार बना के तो देख,
तुम्हें सबकी गुलामी से न छुड़ा दूँ तो कहना।
मेरे लिए आँसू बहा के तो देख,
संसार के लिए रोना बन्द न करवा दूँ तो कहना।
तू मुझे प्यार करके तो देख,
तुझे सकल जगत का प्यारा न बना दूँ तो कहना।
तू मेरे लिए तप के तो देख,
ताप से तप्त हृदय-मन को शान्त न बना दूँ तो कहना।''

मेरे गुरुजनों से राम नाम जपने, ध्यान में प्रतिदिन बैठने तथा सत्संग में भाग लेने का किया वायदा याद करने का दिन है आज। आज के इस महा माँगलिक दिवस पर आप सबको हार्दिक बधाई तथा सदाचारी व साधनामय जीवन के लिए मँगल कामनाएँ। सप्रेम सादर नमन। ■

(2 जुलाई 2004 व्यास पूर्णिमा पर परम पूजनीय श्री महाराज जी का संदेश।)

गुरू तत्व : परमात्मा की ओर उन्मुख करने के लिए गुरू परमात्मा से भी पहले पूज्य

अध्यात्म विद्या में गुरू की महत्ता सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। संत कबीर कहते हैं कि :

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय।।

अर्थात् गुरू इसलिए पूजनीय है क्योंकि वह परमात्मा को बताने का काम करता है। पार्वती जी सप्त ऋषियों से कहती हैं कि :

गुरू के वचन प्रतीति न जेही।
सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही।।

अर्थात् जिसे गुरू के वचन पर विश्वास नहीं है उसे सपने में भी सुख और सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकते।

गुरू की इस महत्ता को श्रीरामशरणम् के मार्गदर्शकों ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से नए आयाम दिए। पूज्य स्वामी जी महाराज ने गुरू की महत्ता को स्वीकार तो किया परन्तु 'गुरूडम' का विरोध किया इसीलिए अपनी उपासना पद्धति में उन्होंने गुरू–दक्षिणा तथा पैर छूने–छुआने का निषेध किया। श्री भक्ति प्रकाश में परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने लिखा है :

कुमति कूप में पतन था, पकड़ निकाला हाथ।
धाम बताया ईश का, देकर पूरा साथ।।

अर्थात् गुरू वही है जो ईश का धाम बता दे। गुरू तत्व है शरीर नहीं। गुरू अंतःकरण में, शक्तिमय है, ज्ञानमय है, आनंदमय है—उसमें परमात्म तत्व सूक्ष्म रूप से समाया हुआ होता है। अतः पूजा उसके इस सूक्ष्म भाव की, सूक्ष्म तत्व की, की जाती है, शरीर की नहीं। अतः गुरू का वचन हमारे लिए अधिक महत्व का होना चाहिए। यही भावना श्रीरामशरणम् में गुरूजनों ने सुस्थापित की।

नाम—दीक्षा देते समय भी पूज्य श्री प्रेमजी महाराज तथा पूज्य श्री महाराज जी ने स्वयं को कभी भी गुरू नहीं कहा। वे स्पष्ट कहते थे कि आपके गुरू श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज हैं। व्यक्ति—पूजा को बढ़ावा न मिले, इसी निमित्त व्यास—पूजा के अवसर पर भी वे स्वयं खड़े होकर पूज्य स्वामी जी महाराज को पुष्प अर्पित करने के लिए साधकों को अपने हाथों से पुष्प दिया करते थे। मानो अपने आचरण के माध्यम से वे हमें संदेश दिया करते थे कि गुरू शरीर नहीं है वह तो विचार है, तत्व है, मार्गदर्शक है जिसका लक्ष्य आत्मा को परमात्मा की ओर उन्मुख करके अंततः उसे परमात्मा से मिला देना है। बताए गए मार्ग पर चलने का काम साधक को स्वयं ही करना पड़ेगा। सच्चे संत की शरण में बैठने से विश्राम तो मिलेगा पर मन माँगा फल तो राम—नाम जपने से ही मिलेगा।

ऐसे विशुद्ध आध्यात्मिक मार्ग पर हमारे गुरूजनों ने हमें अग्रसर किया है। गुरूमुखी बनकर चलेंगे तो निश्चित परमात्म तत्व को पा जाएँगे। यदि मनमुखी बनकर चले तो आडम्बर के कुचक्र में फँस जाएँगे। अतः गुरू पूजन का वास्तविक अर्थ गुरू द्वारा बताई गई विधि से परमात्मा की प्राप्ति की ओर बढ़ना ही है। इसीलिए परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने कहाः परम गुरू जय जय राम। ■

(एक वरिष्ठ साधक)

सद्ग्रन्थ ही हमारे लिए सत्संग एवं संगति हैं

महाराज के सद्ग्रन्थ ही हमारे लिए सत्संग हैं एवं संगति है। महाराज कहा करते थे, ''मैं कोई कवि नहीं, कोई लेखक नहीं हूँ। जब कलम चलती थी मैं लिखता जाता था, और कलम रुक जाती थी, तब लिखना बंद हो जाता था।'' सद्ग्रन्थों व महाराज की संगति छोड़ कर दूसरे ग्रन्थों में पड़ जाना उसी प्रकार है, जिस प्रकार एक अच्छा बच्चा कुसंगति में पड़ जाता है। ■

(परम पूजनीय श्री प्रेमजी महाराज के श्री मुख वाक्य प्रवचन पीयूष पृष्ठ 515)

राम नाम-महा मंत्र

गुरु द्वारा दिया मंत्र महा मंत्र है। कोई पूछे कि नाम से क्या मिला ? तो चिन्ता नहीं करनी चाहिए। गाड़ी में चलने वाले और जहाज़ में चलने वाले में अन्तर है। राम नाम का आराधन करने वाला किसी की चिन्ता नहीं करता। अपना काम राम नाम आराधन है। जितना कर सकेंगे उतनी ही जागृति होगी—भलाई होगी। एक दिन परम धाम प्राप्त होगा। महापुरुष जीवित ही रह कर धाम को प्राप्त कर लेते हैं—अशरण शरण की भक्ति, उसके दरबार में प्रीति—अपना सफल जीवन जानिएगा। ■

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के प्रवचन का अंश, 1 जुलाई 1966, परम पूजनीय महाराज की डायरी से)

गुरु तत्व

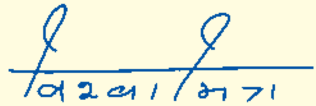

शबरी कहती है, गुरु मन्त्र का मिलना और गुरु के प्रति गुरु भाव होना, ये जीवन की कोई छोटी उपलब्धियाँ नहीं हैं। बहुत सुन्दर शब्द हैं साधकजनो, याद रखने योग्य। नाम दान मिलना, मन्त्र का मिलना और गुरु के प्रति गुरु भाव का होना, ये जीवन की छोटी उपलब्धियाँ नहीं हैं, तुच्छ उपलब्धियाँ नहीं हैं। नाम दान अपने आप में बहुत बड़ी बात है, गुरु के द्वारा गुरु मन्त्र मिलना अपने आप में बहुत बड़ी बात है, पर चलिए इसे तो आप सामान्य ही समझिएगा, सबने गुरु मन्त्र लिया हुआ है। यहाँ संत –महात्मा बहुत बारीक बातें समझाते हैं, जिन्होंने नाम दान ले लिया है, जिन्होंने गुरु मन्त्र ले लिया है, गुरु कृपा उन पर हो गई, गुरु मन्त्र उनको मिल गया, वे सब गुरु महाराज के साथ रहने के अधिकारी बन जाते हैं। गुरु का साथ उन्हें मिलता है, लेकिन गुरु के पास तो कोई–कोई रहता है। दो शब्द हैं एक साथ रहना और दूसरा पास रहना।

जिन्होंने गुरु मन्त्र ले लिया है, गुरु कृपा उन पर हो गई, गुरु मन्त्र उनको मिल गया, वे सब गुरु महाराज के साथ रहने के अधिकारी बन जाते हैं। गुरु का साथ उन्हें मिलता है, लेकिन गुरु के पास तो कोई-कोई रहता है। दो शब्द हैं एक साथ रहना और दूसरा पास रहना।

साथ रहने का अधिकार तो हर एक को है, जिसने नाम दान ले लिया है। लेकिन पास रहने का अधिकार केवल उसी को है जिसके अन्दर गुरु भाव है जिसने अपने आप को, अपना सब कुछ जो है, वह गुरु के श्री चरणों में समर्पित कर दिया है, इसलिए पास रहने वाला कोई–कोई, साथ रहने वाले सब हैं। इस अन्तर को समझिएगा, शबरी कहती है हमारे अन्दर गुरु भाव होना चाहिए। क्या अभिप्राय है साधकजनो? स्वामी जी महाराज ने कितने सुन्दर ढंग से हमें इस बात को समझाया है। स्वामी जी महाराज गुरु महिमा के अन्तर्गत लिखते हैं ''गुरु को करिए वंदना, भाव से बारम्बार।'' कैसे बारम्बार करें, स्वामी जी आप ही बताइएगा। किसी को गुरु साल में एक दफ़ा मिलता है, किसी को अनेक वर्षों में एक दफ़ा मिलता है, किसी को रोज़ दर्शन होते हैं, आप कहते हैं –''गुरु को करिए वंदना भाव से बारम्बार।''

स्वामी जी महाराज ने एक शब्द लिखा है– भाव से बारम्बार। दो अर्थ हो सकते हैं। एक तो ये [with reverence] श्रद्धापूर्वक, प्रेमपूर्वक, भक्तिपूर्वक करिएगा। एक– ये समझिएगा असली गुरु भाव क्या है ? यदि आप गुरु को बार–बार प्रणाम करना चाहते हैं, तो उनका शरीर आपको चाहिए होगा, जो सम्भव नहीं है। गुरु तो एक ही जगह पर हो सकता है, दिल्ली में हो सकता, मुम्बई में हो सकता है, हिमाचल प्रदेश या पंजाब में हो सकता है। शरीर उसका हर जगह विद्यमान तो नहीं हो सकता। यहाँ स्वामी जी महाराज फरमा रहे हैं, भाव से बारम्बार – आप अनेक बार कीजिएगा। कहाँ से लाएँ उसके शरीर को, उन्हें भाव से बार–बार वन्दना करने के लिए? क्या करें? इसलिए कहा,''भाव से बारम्बार'' मानो यह समझ लीजिएगा, पक्का दृढ़ निश्चय कर लीजिएगा जिसके लिए मैं कह रहा हूँ, गुरु को करिए वन्दना भाव से बारम्बार, वे शरीर नहीं हो सकता, वे शरीर नहीं हैं।

साधकजनो संत महात्मा समझाते हैं, शास्त्र भी स्पष्ट करता है, जिस किसी ने भी गुरु को शरीर समझा

वह फँस गया। इस जंजाल से निकलना बहुत कठिन बात है। इसलिए गुरु तत्व है।

आप बार–बार नमस्कार, जहाँ भी बैठे हुए हैं, आप वहीं बैठ कर नमस्कार कर सकते हैं। क्यों? आप गुरु के शरीर को प्रणाम नहीं कर रहे। गुरु के जो अन्दर तत्व बैठा हुआ है, परम गुरु जिसे स्वामी जी महाराज ने "परम गुरु जय जय राम" कहा है, वह बैठा हुआ है, आप उन्हें प्रणाम कर रहे हैं। जितनी मर्जी बार करिएगा, आपको अपने साथ शरीर को ले जाने की ज़रुरत नहीं है। आप करिएगा जहाँ भी वह तत्व विद्यमान है। शबरी समझाती है गुरु भाव होना कोई छोटी बात नहीं है। यह होता नहीं है। हम शरीर के साथ ही चिपके रहते हैं गुरु को शरीर ही समझते हैं इसलिए प्रश्न उठते हैं। यदि उसे भी कैंसर के साथ ही मरना है तो इतनी भक्ति इत्यादि करने का क्या लाभ, गुरु पद पाने की क्या आवश्यकता, क्या महत्व हुआ जिन्दगी में, यह प्रश्न तभी उठते हैं साधकजनो, यदि आप गुरु को शरीर ही मान रहे हो। यदि उसको तत्व मानते हो तो, ये प्रश्न आपके मन में कभी नहीं उठ सकते..... शबरी हमें आज यही बात स्पष्ट कह रही है, इसी गुरु भाव में रहने के लिए हमें सचेत कर रही है।

आप बार-बार नमस्कार, जहाँ भी बैठे हुए हैं, आप वहीं बैठ कर नमस्कार कर सकते हैं। क्यों? आप गुरु के शरीर को प्रणाम नहीं कर रहे। गुरु के जो अन्दर तत्व बैठा हुआ है, परम गुरु जिसे स्वामी जी महाराज ने "परम गुरु जय जय राम" कहा है, वह बैठा हुआ है, आप उन्हें प्रणाम कर रहे हैं। जितनी मर्जी बार करिएगा, आपको अपने साथ शरीर को ले जाने की ज़रुरत नहीं है।

कहाँ ढूँढोगे स्वामी जी महाराज को आप? वे तो ब्रह्मलीन हो गए हुए हैं। क्या उनको आप नमस्कार नहीं करते? क्या उनको आप वन्दना नहीं करते? क्या उनको आप प्रणाम नहीं करना चाहते? किसको करते हो? उनका शरीर तो इस संसार में नहीं है। शबरी इस बात पर बहुत बल दे रही है, गुरु के शरीर ने सदा नहीं रहना लेकिन गुरु तत्व कभी मरता नहीं है। याद रखो देवियो और सज्जनो संत महात्मा शबरी के माध्यम से यही आप को स्पष्ट कर रहे हैं इसी को गुरु भाव कहा जाता है। आप अमेरिका में हो, आप कैनेडा में हो, आप ऑस्ट्रेलिया में हो, गुरु तत्व आपके साथ है, शबरी इस को गुरु भाव कहती है। बहुत ऊँची बात यह, ऐसी भावना हमारे अन्दर होनी चाहिए।

देवियो–सज्जनो, यहाँ और थोड़ी सी चीज़ स्पष्ट करने की ज़रुरत है। आपको याद दिलाने की आवश्यकता है। हमारी साधना पद्धति भी भाव प्रधान पद्धति ही है, वस्तु प्रधान नहीं है, सामग्री प्रधान नहीं है। देखो कहीं पर फूल नहीं चढ़ाए हुए, कहीं किसी भी जगह पर सत्संग होता है वहाँ पर फूल नहीं चढ़ाया जाता, प्रसाद नहीं चढ़ाया जाता। अन्य मन्दिरों में आप जाएं। भरपूर ढेर लगे हुए हैं इन चीज़ों के। आपके यहाँ ऐसा नहीं है क्यों? स्वामी जी महाराज की साधना पद्धति, पूजा पद्धति, सामग्री प्रधान नहीं है, वस्तु प्रधान नहीं है, भाव प्रधान है। आज शबरी गुरु के लिए भी ऐसा कह रही है, जैसा स्वामी जी महाराज परमात्मा के लिए कहते हैं। ■

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन 21 अक्तूबर, 2007, रामायणी सत्संग, हरिद्वार)

जीवन डोरी सौंप दो,
राम जी के हाथ में,
डगर डगर पर पाओगे
राम जी को साथ में।

विश्वास और भरोसा

(परम पूजनीय महाराज जी के प्रश्नोत्तर के अंश)

प्र. अपने साथी में भरोसा होने का क्या अर्थ है?

पूजनीय महाराज जी : अंग्रेज़ी शब्दकोश में विश्वास (Faith) और भरोसा (Trust) समानार्थक शब्द हैं। इनका अर्थ एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग होता है। इन दोनों शब्दों का प्रयोग प्राथमिक रुप से परमात्मा के लिए होना चाहिए, पर ये शब्द संसारियों के लिए भी प्रयोग होते हैं। विश्वास का अर्थ है उस परम सत्ता को स्वीकार करना। यह मानना कि वह सर्वसमर्थ (Omnipotent) व सर्वव्यापक (Omnipresent) है–यही विश्वास है। अपने साथी पर भरोसा सत्य से सम्बन्धित है। परमात्मा में विश्वास पूर्ण है।

इस संसार में कौन भरोसे के योग्य है? परमेश्वर के अतिरिक्त किसी की भी स्थाई शरण नहीं ली जा सकती। केवल उसी में विश्वास और भरोसा रखो।

प्र. भरोसे के सम्बन्धों में आपका योगदान क्या है? जब आप किसी पर भरोसा करते हैं तो क्या उससे आपको कुछ अपेक्षाएँ होती हैं? क्या आपको भी कुछ करना होता है?

पूजनीय महाराज जी : मानवीय सम्बन्धों का आधार विश्वास है। राजा दशरथ को अपनी पत्नी कैकेयी पर कितना सुदृढ़ विश्वास था। वह अपने पति के साथ युद्ध क्षेत्र में गई, वहाँ युद्ध के दौरान, रथ के पहिए से कील निकल गया। कैकेयी ने तुरन्त कील की जगह अपनी दो अंगुलियाँ डाली और राजा की जिन्दगी बचाई। राजा ने उसे दो वर दिए। जब राजा, जीवन की रक्षा करने वाली कैकेयी के पास अपने ज्येष्ठ पुत्र राम के राज्यभिषेक का शुभ समाचार लेकर गए तो उन्हें अटूट विश्वास था कि वह खुशी से झूम उठेगी। पर क्या हुआ? कैकेयी ने जिन दो अंगुलियों से राजा की जान बचाई थी, उन्हीं से दो वर माँग कर राजा के प्राण ले लिए। इस संसार में कौन भरोसे के योग्य है? परमेश्वर के अतिरिक्त किसी की भी स्थाई शरण नहीं ली जा सकती। केवल उसी में विश्वास और भरोसा रखो। सबको परमेश्वर मानो और सबमें संशयहीन विश्वास करो। यही एक साधन है, सारे विश्व में शान्ति लाने का। अकेला परमेश्वर ही हर समय, हर जगह आपके साथ है।

प्र. भरोसा (Trust) और विश्वास (Faith) में क्या अन्तर है?

पूजनीय महाराज जी : मैंने इस तथ्य को पहले उत्तर में स्पष्ट करने की कोशिश की है। फिर भी कुछ और कहूँगा। इन दोनों शब्दों का हिन्दी में अर्थ अधिक स्पष्ट है। Faith का अर्थ है विश्वास (अति श्रद्धा के साथ विश्वास) और Trust का अर्थ है भरोसा या संशयहीन निर्भरता।

प्र. यह कैसे निर्णय लिया जाए कि यह व्यक्ति भरोसे के योग्य है या नहीं? हम कुछ लोगों पर बिना सोचे ही भरोसा या संशय कर लेते हैं?

पूजनीय महाराज जी : केवल परमात्मा ही भरोसे के योग्य है। हम अपने संस्कारों के अनुसार ही किसी साथी पर बिना सोचे समझे भरोसा या संशय करते हैं। किसी दूसरे पर भरोसा करने या संशय करने से पहले हमें अपने आपको भरोसेमंद और विश्वास योग्य बनाना है। परमात्मा पर पूर्ण विश्वास ही हमारे स्वाभाविक ज्ञान का सुधार कर सकता है।

प्र. अध्यात्म सबके प्रति मैत्री भाव करना सिखाता है पर हम सब पर तो भरोसा नहीं कर सकते। इन दोनों में कैसे साम्यता करेंगे?

पूजनीय महाराज जी : अध्यात्म हमें बिना वाद विवाद के विचार से, एक व सबके प्रति मैत्री करना सिखाता है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए संसार ही ईश्वर है। परमेश्वर पर भरोसे का अर्थ है सब पर भरोसा और सब पर भरोसा करना अर्थात् परमात्मा पर भरोसा करना। परमात्मा उसकी रक्षा करने के लिए तुरन्त आता है। भरोसा या विश्वास जीवन को व्यग्रता, चिन्ता, भय के बिना सरल बना देते हैं। ■

(सत्य साहित्य अक्तूबर 2015 में बाकी अंश प्रकाशित होगा। Originally published in 'U can change the World', Vol. 1, No. 5, March 2003, Jain Vishwa Bharti Institute publication)

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के संस्मरण

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज का एक चहेता परिवार मिलने आया। 1958 में दीक्षा हुई थी। दोनों पति पत्नी युवावस्था में थे, माह की 27 तारीख और नौकरी के पैसे खत्म थे। स्वामी जी ने कहा,''साधना सत्संग के लिए हरिद्वार चलो।'' गहरी सोच में पड़ गए। स्वामी जी ने कहा,''किस सोच में डूबी हो, 27 तारीख है तो क्या हुआ?'' परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की ओर संकेत करके कहा,''इसे राखी बाँधती हो, यह प्रबन्ध करेगा। आप जाने की तैयारी करो।''

सत्संग में खूब आनन्द आया। अन्तिम दिन मार्किट से प्रसाद खरीदने के लिए पैसे नहीं थे—लोग मार्किट से अपनी टोकरी ला रहे थे— सोच में डूबी को स्वामी जी महाराज ने ऊपर कमरे में बुलाया और कहा,''क्या सोचती रहती है? उठा प्रसाद की टोकरी, ये ले जा। लौटने के लिए यहाँ से दो गाड़ियाँ जाएँगी, एक में तो मैं जाऊँगा, दूसरी में आप दोनों adjust हो जाना।''

मन की बातों को इतनी गइराई से, इतनी परिशुद्धता से पढ़ लेना और छुपा कर रखना — ऐसे संत शिरोमणि स्वामी जी महाराज । ■

(परम पूजनीय महाराज जी की डॉयरी से)

अनुभूतियाँ

संत कभी सूक्ष्म रुप से संसार से नहीं जाते

मैं परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज द्वारा दीक्षित एक तुच्छ साधिका हूँ। मैंने नाम दीक्षा ली, परन्तु किसी कारणवश मैं श्री रामशरणम् नियमित नहीं आ पाती हूँ। जब भी मैंने उनको पत्र लिखा उनसे मुझे उत्तर प्राप्त हुआ, इस बात की मैं कृतज्ञ हूँ। उनके दर्शन भी मैंने बहुत कम बार किए हैं। एक बार कार में जाते—जाते उन्होंने मुझे बहुत सुन्दर मुस्कान के साथ दर्शन दिए, उसके बाद मेरा जीवन ही बदल गया।

एक बार मुझे श्री महाराज जी ने ध्यान में दर्शन दिए। मैंने पूछा महाराज जी अब आप चले गए हैं तो उन्होंने कहा, संत कभी सूक्ष्म रुप से संसार से नहीं जाते। फिर वे मुझे एक सुरंग से लेते हुए एक कमरे में ले गए वहाँ स्वामी जी महाराज, परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की तस्वीर थी। वहाँ महाराज जी का आसन भी था। उन्होंने कहा,''साधना का समय था इसलिए मैं आ गया। तुम्हारे जीवन में बिगुल बजा दिया है अब चलते चलो, मील पत्थर बहुत आएँगे तुम चलते जाना सफ़र पर। संत का आना भी उत्सव होता है और जाना भी उत्सव होता है क्योंकि वे नाम लेकर आते हैं और नाम देकर जाते हैं। यह उनका हर एक साधक के लिए उपदेश है।'' फिर उन्होंने कहा ''मैं तुम्हें राम देता हूँ'', ऐसा कहते ही फिर एक प्रकाश उनके हाथ से मेरे अन्दर आ गया। कल फिर श्री महाराज जी ध्यान में आए और उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा ''अब समय आ गया तुम ये सब दिल्ली भेज दो''। महाराज जी की वही जानें मुझे जो कहा मैं वही कर रही हूँ। ■

नीलधारा का पत्थर : एक संवाद

मन ने सोचा, बहुत ही आलोचा,
कि क्या कारण रहा होगा?
नीलधारा का वो पत्थर, क्यों तत्पर,
होकर इतना कठोर प्रस्तर,
दो तारीख की, प्रातः कालीन बेला में,
गंगा नदी की शान्त सुहेला में,
वृक्षों, लहरों की साक्षी में,
समस्त सेवकों की हाज़री में,
मेरे गुरुदेव की कहानी का बना,
वो मूक वारिस, खाली में,
चूँकि हर पत्थर तो रहता है तत्पर,
श्री राम शुश्रुषा का,
भव सागर से पार उतरने की
अपार हर्षा का

यदा कदा मेरे गुरुदेव आते थे,
इसका आश्रय लेकर मान इसी का बढ़ाते थे,
फिर किस चाह की चाहना ने,
इस प्रस्तर को किया है मजबूर,
कि कहीं? राम सेतू न बन जाए,
मैं सेवा से हो जाऊँ दूर,
फिर ध्यान आया कि नहीं नहीं,
राम सेवक नहीं होते हैं क्रूर,
वो भयभीत था और आतुर था
कि कहीं किसी और हाथ में जाने से
हो जाऊँ न मजबूर,

क्षमा

अचानक ख्याल आया कि
क्या लिख दिया इस निर्दोष को,
बुरा लगा होगा गुरुदेव को,
जिन्होंने उसे इतना सम्मान दिया।
वो न होता, तो सशरीर जाते गुरुवर,
एहसान सा था इसका,
मेरे गुरुवर ऊपर,
इसलिए सोचा,
बिना इसे निशानी दिए जाऊँगा,
तब कौन याद करेगा इसको,
इस तरह मान देकर।

धन्य है तू पत्थर,
बेहतर है कहीं हम पत्थरों से,
चूँकि हम भी पास बैठे थे,
आँखें बन्द किए साथ ही बैठे थे,
पर तू निष्काम था,
इसलिए निःस्वार्थ चाल चल गया,
हमसे बढ़ कर, बड़ा काम कर गया।

(एक साधिका)

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

मार्च से जून 2015

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

पूणे, महाराष्ट्र, में 28 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 101 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

कोल्हापुर, महाराष्ट्र, में 1 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 72 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

भरेड़ी, हि.प्र. में 1 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें लगभग, 600 साधक सम्मिलित हुए और 161 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

सतना, मध्यप्रदेश, में 21 मार्च को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम के पश्चात् 624 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

नरोट मेहरा, पंजाब में 26 मार्च को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम के पश्चात् 318 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

हरिद्वार में 31 मार्च से 5 अप्रेल तक साधना सत्संग हुआ। 8 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

मण्डी, हि.प्र. में 5 अप्रेल को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ। 73 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

ज्वाली, हि.प्र. में 14 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 559 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

सरदारशहर, राजस्थान, में 19 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 775 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

कोटा, राजस्थान, में 26 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 153 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

बलाना, हि.प्र. में 26 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 65 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

सुबा, फ़िजी, में 25 से 26 अप्रेल को खुले सत्संग का आयोजन हुआ।

लबासा, फ़िजी, में 28, 29, 30 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम हुए।

नाडी, फ़िजी, में 1 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम हुए।

बा, फ़िजी, में 2 से 3 मई को खुले सत्संग का आयोजन हुआ। फ़िजी में कुल 171 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। 61 साधकों ने सवा करोड़ जाप के लिए संकल्प लिया।

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में 30 मई को श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ हुआ।

कण्डाघाट, हि.प्र. में 9 मई को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें लगभग, 36 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

चम्बी, हि.प्र. में 11 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 37 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

पांवटा साहिब, हि.प्र. में 24 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 194 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

फरीदाबाद, हरियाणा में स्थानीय श्रीरामशरणम् की वर्षगाँठ पर 25 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 90 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

दिल्ली में मार्च, अप्रैल एवं मई के माह में 392 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

मनाली, हि.प्र. में 14 से 16 जून को तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा, उसके पश्चात् नाम दीक्षा भी होगी।

गाठा, भधरवाह, जम्मू कश्मीर, जो की जम्मू से लगभग 225 कि.मी. आगे है, में 18 जून की अपराह्न 4 से 5:15 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन होगा, उसके पश्चात् नाम दीक्षा भी होगी।

सैलसबर्ग, अमेरिका, में 25 से 28 जून तक खुले सत्संग का आयोजन होगा, जिसके दौरान नाम दीक्षा होगी।

हरिद्वार में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूजनीय महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग होगा।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

तिब्बड़, पंजाब, में श्रीरामशरणम् का कार्य प्रगति पर है और इसी वर्ष निर्माण पूर्ण हो जाने की आशा है।

बलहासा, झाबुआ, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का कार्य अन्तिम चरण में है और इसी वर्ष उसका उद्घाटन होने की आशा है।

बीकानेर, राजस्थान में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य शीघ्र आरम्भ हो जाएगा। ■

दीक्षा देने का अधिकार किसको ?

एक संत से किसी जिज्ञासु ने पूछा, ''महात्मा जी ! मंत्र देने का अधिकार किसको है?'' संत ने कहा,''जिसे मंत्र देने का अधिकार है वही दे सकता है। अनाधिकारी व्यक्ति को मंत्र देने का अधिकार नहीं है।'' जिज्ञासु ने प्रार्थना की,''महात्मा जी! अधिकारी-अनाधिकारी की बात को ठीक प्रकार से समझाएँ।''

संत ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा,''एक बार एक राजा किसी विशेष कार्य से अपने मंत्री के घर गया। राजा के साथ उसके अंगरक्षक भी थे। जिस समय राजा मंत्री के घर पहुँचा, उस समय मंत्री अपने साधना कक्ष में किसी मंत्र का जाप कर रहा था। मंत्री का जप पूरा होने तक राजा को प्रतीक्षा करनी पड़ी। जप पूरा होने के पश्चात् मंत्री कक्ष से बाहर आया और उसने राजा का अभिनन्दन किया। राजा ने मंत्री से पूछा, ''कक्ष में आप क्या कर रहे थे?'' मंत्री ने उत्तर दिया, ''महाराज! मैं मंत्र की साधना कर रहा था।'' राजा ने कहा, ''वह मंत्र आप मुझे भी दें, जिससे मैं भी जाप कर सकूँ।'' मंत्री ने कहा,''महाराज! मुझे मंत्र देने का अधिकार नहीं है। किसी सद्गुरु से ही आप मंत्र ग्रहण करो।'' राजा ने हठ किया, ''नहीं, मैं किसी गुरु को नहीं जानता। आपको ही मुझे मंत्र देना होगा।'' अब राजा की हठ के सामने मंत्री क्या करे।

मंत्री बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति था। उसको युक्ति सूझी। उसने राजा के साथ आए हुए सैनिकों को आदेश दिया, ''सैनिको! राजा को गिरफ़्तार कर लो।'' सैनिकों ने मंत्री की बात को सुनकर भी अनसुना कर दिया। मंत्री ने कई बार अपने आदेश को दोहराया कि राजा को गिरफ़्तार करो परन्तु सैनिकों ने मंत्री के आदेश पर ध्यान नहीं दिया। मंत्री के विचित्र आदेश को सुनकर राजा को बहुत क्रोध आया। उसने अपने सैनिकों से कहा,''इस मंत्री को तुरंत गिरफ्तार कर लो।'' राजा का आदेश मिलते ही सैनिकों ने मंत्री को तत्क्षण गिरफ़्तार कर लिया। तब मंत्री ने कहा, ''महाराज! मैंने अपना उत्तर दे दिया।'' राजा ने पूछा, ''तुमने उत्तर कैसे दिया है?'' मंत्री ने कहा,''महाराज! ये सैनिक आपके अधिकार में हैं, मेरे अधिकार में नहीं। मैंने अनाधिकार चेष्टापूर्वक इनको आपकी गिरफ़्तारी का आदेश दिया, पर इन्होंने आपके आदेश का पालन किया और मुझे गिरफ़्तार कर लिया।''

मंत्री ने स्पष्ट किया, ''महाराज! अगर कोई अधिकारी व्यक्ति आदेश देता है तो काम शीघ्र हो जाता है। अनाधिकारी कोई चेष्टा करे तो दुष्परिणाम होता है। ऐसे ही दीक्षा का अधिकार मेरे पास नहीं है। जिसके पास यह अधिकार है, वही दे सकता है और उसी से प्राप्त मंत्र सिद्ध होता है।'' ■

मानव जन्म अनमोल रे, माटी में न रोल रे।
अब जो मिला है, फिर न मिलेगा, राम राम बोल रे।

पूर्णिमा की तिथियाँ (जुलाई से दिसम्बर 2015)		
जुलाई	2, 31	वीरवार व शुक्रवार
अगस्त	29	शनिवार
सितम्बर	28	सोमवार
अक्तूबर	27	मंगलवार
नवम्बर	25	बुधवार
दिसम्बर	25	शुक्रवार

साधना सत्संग (जुलाई से दिसम्बर 2015)		
हरिद्वार	30 जून से 3 जुलाई	मंगलवार से शुक्रवार
हरिद्वार	26 से 31 जुलाई	रविवार से शुक्रवार
हरिद्वार	30 सितम्बर से 3 अक्तूबर	बुधवार से शनिवार
हरिद्वार (झाबुआ साधकों के लिए)	5 से 8 अक्तूबर	सोमवार से गुरुवार
हरिद्वार (रामायणी)	13 से 22 अक्तूबर	मंगलवार से गुरुवार
हरिद्वार	11 से 14 नवम्बर	बुधवार से शनिवार
ग्वालियर	27 से 30 नवम्बर	शुक्रवार से सोमवार

खुले सत्संग (जुलाई से दिसम्बर 2015)		
हिसार	11 से 12 जुलाई	शनिवार से रविवार
रोहतक	15 से 16 अगस्त	शनिवार से रविवार
रतनगढ़	5 से 6 सितम्बर	शनिवार से रविवार
गुरदासपुर	18 से 20 सितम्बर	शुक्रवार से रविवार
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया	26 से 27 सितम्बर	शनिवार से रविवार
जम्मू	9 से 11 अक्तूबर	शुक्रवार से रविवार
रेवाड़ी	24 से 25 अक्तूबर	शनिवार से रविवार
अमृतसर	1 नवम्बर	रविवार
पठानकोट	7 से 8 नवम्बर	शनिवार से रविवार
कपूरथला	21 से 22 नवम्बर	शनिवार से रविवार
सूरत	19 से 20 दिसम्बर	शनिवार से रविवार
सुजानपुर	26 से 27 दिसम्बर	शनिवार से रविवार

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली नाम दीक्षा की तिथियाँ (जुलाई से दिसम्बर 2015)		
31 जुलाई	शुक्रवार	सायं 4:00
23 अगस्त	रविवार	प्रातः 10:30
6 सितम्बर	रविवार	प्रातः 10:30
4 अक्तूबर	रविवार	प्रातः 10:30
15 नवम्बर	रविवार	प्रातः 11:00
6 दिसम्बर	रविवार	प्रातः 11:00

अन्य स्थानों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ (जुलाई से दिसम्बर 2015)		
12 जुलाई	रविवार	हिसार
16 अगस्त	रविवार	रोहतक
6 सितम्बर	रविवार	रतनगढ़
20 सितम्बर	रविवार	गुरदासपुर
27 सितम्बर	रविवार	सिडनी, ऑस्ट्रेलिया
11 अक्तूबर	रविवार	जम्मू
25 अक्तूबर	रविवार	रेवाड़ी
1 नवम्बर	रविवार	अमृतसर
8 नवम्बर	रविवार	पठानकोट
22 नवम्बर	रविवार	कपूरथला
20 दिसम्बर	रविवार	सूरत
27 दिसम्बर	रविवार	सुजानपुर

सात्विक विचार : गुरु कृपा से

राम नाम का साधक स्वयं को घट बना कर परम गुरु राम को उसमें स्थापित करता है। "घट" अर्थात पवित्र बर्तन। अतः हमारा शरीर दीक्षा के दिन से ही मन्दिर बन जाता है। क्या ये यह मन्दिर अभी भी पवित्र है? क्या हमारा जीवन साधनामय है या हम अपनी सुविधानुसार इससे खेल रहे हैं। स्वयं से पूछने पर हमें इसका उत्तर मिलेगा। हम अपने प्रियजनों को अपशब्द कह कर और ताने मार कर बुरे कर्म कमाते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि परम गुरु का सी.सी. टी.वी. कैमरा हमारे कर्मों की रिकार्डिंग हर समय कर रहा है क्योंकि हम स्वयं ही परमेश्वर का मन्दिर हैं।

हम चालाक हैं क्योंकि हम कहते हैं कि यदि हम शारीरिक रुप से किसी को कष्ट नहीं देते तो हमारे कर्म बुरे नहीं हैं। श्री स्वामी जी महाराज के अनुसार राम नाम चिन्तन, राम नाम जाप, राम नाम सिमरन ही मानस साधना है। अतः हमारे कर्म हमारी साधना के रुप में, हमारे मन से ही शुरु हो जाते हैं। जो हम सोचते हैं वह रहस्य है। पर हम जानते हैं कि हमारा मन चंचल और बेलगाम घोड़ा है। हमारा मन गन्दगी से भरा हुआ है, जैसे कि हम अनैतिक सोचते हैं। हमारी इच्छाएँ भी बुरी हैं। हम दूसरों के लिए बुरा सोचते हैं और योजना भी बनाते हैं। यह सब हमारा मन जानता है और कोई नहीं जानता। कई बार हमारा मन नकारात्मक ही नहीं सोचता अपितु नकारात्मक क्रिया की योजना भी बनाता है। हम दूसरों को अपनी सोच जानने की अनुमति नहीं देते। परम गुरु राम तो आपके मन में है क्या आप उससे अपनी खराब सोच छुपा सकते हैं? नहीं, हम नहीं कर सकते। हम सब राम के आगे नग्न हैं। सोचना भी हमारा कर्म है, इसी कारण हमें विभिन्न प्रकार के शारीरिक और मानसिक कष्ट होते हैं। परम पूजनीय महाराज जी ने बताया है कि राम जी को नकाब या दिखावा पसन्द नहीं था! श्री स्वामी जी महाराज ने हमें हर समय अजपा जाप करने को कहा जिससे हमारा मन पवित्र हो जाए और हमारे मानस और चिन्तन कर्म ऊँचे हो जाएँ। मन पवित्र हो जाता है, जब हमें एहसास हो जाता है कि राम को हमारी सोच के बारे में जानकारी है चाहे हम उसे जितनी भी होशियारी से सामाजिक रुप से छुपा रहे हैं। गुरु कृपा और राम कृपा से ही, उसी मन से पवित्र या सात्विक विचार और सबके कल्याण और सबके लिए शुभ चिन्तन व आशीर्वाद सम्भव है।

पवित्र विचार न केवल एकाकी मन को यूनिवर्सल मन से जोड़ते हैं अपितु हमारे कर्मों को सोच स्तर से भी सुधारते हैं। बस हमें थोड़ा सा समय निकाल कर सूझबूझ से यह सोचना है कि हम अपने कर्म ऐसे मन से कर रहे हैं जिससे हम दर्द और पीड़ा के परिणामों को आकर्षित कर रहे हैं। हमें अपने मन को अरबों राम नाम शब्द चिन्तन से भरना है जिससे हमारा मन पवित्र हो जाए क्योंकि हमारे मन में परम गुरु राम का निवास स्थान है। याद रखें कि हमारे गलत विचार प्रभु राम का अपमान हैं। चलो अपने मन को अनन्त राम से स्नान कराएँ। ■

(एक वरिष्ठ साधक के विचार)

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव इंडिया, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

आर. एन. आई. न०: 6642